B.Ed. 2018-20 09.4.2020

(1) COURSE EPC-4: Understanding the Self.

Unit-2: Yoga and its role in Self-well-being.
आत्म कल्याण में योग तथा इसकी भूमिका।

Topic: - (b) Awareness of own identity, Social identity, Cultural underpinnings.
स्वयं की पहचान, सामाजिक पहचान तथा सांस्कृतिक आधार के प्रति जागरूकता।

① स्वयं की पहचान के प्रति जागरूकता - एक शिक्षक के रूप में अपने संस्थान के अंदर, छात्र-छात्राओं के बीच, अपने सहकर्मियों तथा प्रशासनिक अधिकारियों के बीच अपनी पहचान बनाना बेहद जरूरी है। संस्थान के अंदर अपनी कार्यशैली व कार्यक्षमता की पहचान, छात्र छात्राओं के बीच विषय-ज्ञान में दक्षता की पहचान, सहकर्मियों के बीच व्यक्तित्व की पहचान तथा पदाधिकारियों की नजर में कर्तव्य-निष्ठा की पहचान बेहद आवश्यक है।

हर इंसान की अपनी-अपनी कार्यशैली होती है। विभिन्न विषयों पर अलग-अलग सोच होती है। अपने जीवन में प्राप्त अनेक अनुभवों के आधार पर पूर्वाग्रह का निर्माण होता है। इन्हीं पूर्वाग्रहों के आधार पर अवधारणा बनती है। यही अवधारणा इंसान की पहचान बनती है। अतः जरूरी है कि अपने कार्यशैली के सकारात्मक पहलुओं को बाहर निकाला जाए, उसका प्रदर्शन हो। तभी एक इंसान की सकारात्मक पहचान बन पाती है।

इसके लिए सकारात्मक सोच, सतत अभ्यास (ताकि दक्षता प्राप्त हो सके), उद्देश्य के प्रति लगनशील होना आवश्यक है। एक शिक्षक की स्वयं की पहचान काफी मायने रखती है।

(2)

(1) सामाजिक पहचान के प्रति जागरूकता ⇒

हर समाज की अपनी-अपनी पहचान होती है उसके स्थानीय लोगों के सहूलियत के हिसाब से अपने-अपने नियम होते हैं। नियमबद्ध रहकर लोग सामाजिक निभाते हैं। हलांकि कई परिवारों के समूह जब एक दूसरे के सहयोग से जीवन-यापन करते हैं। एक जगह एकत्रित रहते हैं। एक-दूसरे के लिए सहूलियतों का निर्माण करते हैं, तब एक समाज का निर्माण होता है।

बेहतर समाज का निर्माण शिक्षित, मेहनती और बेहतर सोच वाले इंसानों से ही संभव है। प्रत्येक समाज शिक्षा के प्रति संवेदनशील होता है अतः समाज के प्रत्येक लोग शिक्षक की ओर देखते हैं एक ऐसा शिक्षक जो उन्हे या उनके बच्चों को शिक्षित-प्रशिक्षित कर एक बेहतरीन जीवन दे सके। समाज के लिए उपयोगी बना सके। एक ऐसा शिक्षक जो समाज को नई दिशा दे सके।

अगर हम गौर करें तो पाते हैं कि समाज शिक्षकों के इर्द-गिर्द ही घूमता रहता है। यानि शिक्षक समाज की धूरी होते हैं। तमाम सरकारी-गैरसरकारी शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षार्थियों की भीड़ इस विचार को प्रतिपुष्ट करती है कि हर इंसान के लिए शिक्षा बेहद जरूरी है और शिक्षक के बिना शिक्षा संभव नहीं

③

अतः समाज मे शिक्षकों की भूमिका मां-पिता से कहीं कम नहीं। एक मां पिता अपने बच्चों के प्रति वफादार होते हैं। उसी तरह शिक्षक भी अपने छात्र-छात्राओं के प्रति वफादार होते हैं।

अतः शिक्षण-वृति अपनाने के पश्चात यह जरूरी हो जाता है कि अपनी इस सामाजिक जिम्मेदारियों को समझा जाए। शिक्षण-वृति में काफी जिम्मेदारी होती है। अतः समाज को अपने से जोड़ने हेतु एक शिक्षक को समाज के हर गतिविधियों में भाग लेना चाहिए। मसलन् सांस्कृतिक कार्यक्रम, सभा-सम्मेलन, वाक विवाद प्रतियोगिता आदि कार्यक्रम में भाग लेना चाहिए या ऐसे कार्यक्रम आयोजित कर समाज के लोगों को शामिल करना चाहिए। ऐसा करने से शिक्षक-शिक्षण संस्थान तथा समाज के बीच एक बेहतर तालमेल बैठता है। यह शिक्षक के साथ-साथ समाज के हित में भी है। इससे शिक्षक की सामाजिक पहचान बनती है। लोग आकर्षित होते हैं। इससे शिक्षण-संस्थान का भी नाम होता है। साथ ही साथ समाज की शिक्षा के प्रति जरूरतों का ज्ञान शिक्षकों को भी होता है। इससे पाठ्यचर्या निर्माण में मदद मिलती है। अतः यह बेहद जरूरी है कि शिक्षक को समाज के प्रति जागरूक होना चाहिए।

(4)

(III) सांस्कृतिक आधार के प्रति जागरुकता ⇒ संस्कृति यानि जीवन निर्वाह करने के कुशल नियम, जो एक बेहतर समाज के का आधार होता है

वैसे तो मनुष्य सामाजिक प्राणी होता है परन्तु हर समाज की अपनी अलग संस्कृति होती है और उसी के आधार पर समाज की पहचान होती है।

क्षेत्र विशेष और परिवेश के हिसाब से सामाजिक नियम बनाए जाते हैं जो एक संस्कृति का रुप ले लेते हैं। समाज का हर शख्स अपने-अपने संस्कृति के प्रति प्रतिबद्ध और जागरुक होते हैं। कभी-कभी तो संस्कृति को धर्म से भी जोड़ दिया जाता है ताकि लोग अपने संस्कृति से जुड़े रहें और समाज का विखण्डन न होने पाए।

हम जानते हैं कि विद्यालय परिसर में, वर्ग में अनेक संस्कृति को अपनाने वाले बच्चे तथा शिक्षक एकत्रित होते हैं। सभी अपने- अपने संस्कृति के प्रति सचेत रहते हैं। अतः ऐसी परिस्थिति में आपसी टकराव होना सामान्य बात है। इसीलिए शिक्षक को विभिन्न संस्कृति के विषय में गहरी समझ रखनी आवश्यक है। ~~सांस्कृतिक पहचान कायम~~

सांस्कृतिक पहचान कायम रहे इसके लिए विद्यालय में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करवाये जाते है। इससे सभी की सांस्कृतिक

(5)

संवेदना प्रतिपुष्ट होती है, साथ ही साथ एक दूसरे की संस्कृति को नजदीक से समझने का मौका भी मिलता है।

विद्यालय में सांस्कृतिक ~~आयोज~~ कार्यक्रम आयोजन करवाना बेहद जरूरी है। बच्चे विभिन्न संस्कृतियों को नजदीक से देख-समझ पाते हैं और एक दूसरे के प्रति आदर भाव भी जन्म लेता है।

शिक्षकों को भी समाज के ~~विभिन्न~~ विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेना आवश्यक है। ताकि किसी एक संस्कृति के प्रति प्रेम तथा दूसरे के प्रति अवहेलना की अवधारणा न जन्म ले सके।

अतः शिक्षकों को सांस्कृतिक आधार के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता होती है।

~~आज~~ इस इकाई को पढ़ने-समझने के ~~बाद~~ बाद हमने जाना कि स्वयं की ~~समझ~~, पहचान, सामाजिक पहचान, तथा सांस्कृतिक आधार के प्रति जागरूकता कितना महत्वपूर्ण है।

रमण कुमार
सहायक प्राध्यापक
एल०के० मिश्रा० कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन

13.7.2020